योग दिवस पर सरल योगासन 9
भारत की कानून व्यवस्था को चुनौती 13
सिख समाज ने जाटव बेटी का कराया विवाह 15

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

पाथेय कण

₹10

www.patheykan.com

ज्येष्ठ शु.2, वि.2079, युगाब्द 5124, 1 जून, 2022

आमुख कथा

पत्रकारिता दिवस पर

पत्रकारों के युगधर्म और पत्रकारिता पर हुई चर्चा

पत्रकारों का किया गया सम्मान

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

आपने लिखा है

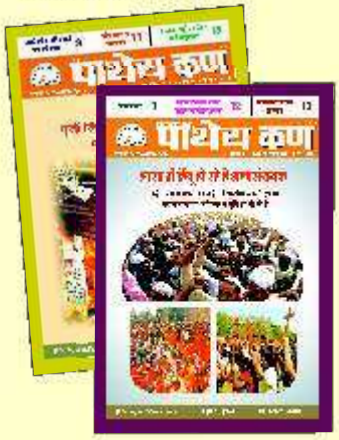

चिंतन

1 मई के अंक में प्रकाशित 'भारत में हिंदू हो रहे हैं अल्पसंख्यक' पढ़कर आश्चर्य हुआ कि 6 राज्य और दो केन्द्र शासित प्रदेश में हिंदू अल्पसंख्यक हैं लेकिन मुस्लिम बहुसंख्यक होते हुए भी अल्पसंख्यक के लाभ ले रहे हैं। केन्द्र सरकार को तुरंत हस्तक्षेप कर यह बंद कर हिंदुओं को लाभ देना चाहिए तथा इन कारणों पर भी चिंतन करना चाहिए कि ऐसी परिस्थिति क्यों पैदा हुई?

–डॉ. सोहन लाल, बांदीकुई

पारम्परिक फिल्में

1 अप्रैल को प्रकाशित हुई पाथेय कण पढ़कर बहुत खुशी हुई। विशेष रूप से चतुर्थ चित्र भारती फिल्मोत्सव, भोपाल पर रोचक जानकारी थी, जिसमें लिखा था कि ऐसी कहानी लाएं जो देश निर्माण में सहभागी बने। हमारे देश में पारिवारिक फिल्मों का निर्माण बहुत ही कम हो रहा है। आज हमारे देश को सामाजिक–पारिवारिक फिल्मों की बहुत जरूरत है।

–खीमराज नामदेव, आहोर, जालौर

सूचिका भेदन

16 अप्रैल के अंक में 'भारत का सूचिका भेदन ही आज का एक्यूपंक्चर' पढ़कर अच्छी जानकारी मिली एवं आनंद की अनुभूति हुई कि प्राचीन भारतीय गौरवशाली इतिहास में भारत चिकित्सा क्षेत्र में कितनी उन्नत अवस्था में था। लेखिका कुसुम शर्मा ने ठीक प्रकार से समझाने का बहुत ही सराहनीय प्रयास किया है। लेख में अर्द्धनारीश्वर स्वरूप को तार्किक रूप से ठीक प्रकार से समझाया गया है। अपने संस्कारों में सूचिका भेदन का कितना महत्व है, इसकी भी अच्छी जानकारी प्राप्त हुई। आपसे निवेदन है कि इस प्रकार से नियमित अंक में एक पृष्ठ स्वास्थ्य का हमेशा रखे जिसमें मौसमी स्वास्थ्य आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती रहे।

–मंजू चौहान, पीलवा, नागौर

उपद्रवियों का बढ़ता दुस्साहस

पाथेय कण का 16 अप्रैल का अंक पढ़ा। अंक में करौली हिंसा के विस्तृत घटनाक्रम को पढ़ा। राजस्थान में पिछले कुछ समय से जिस प्रकार से विधर्मी लोग आतंक फैला रहे हैं इसका मुख्य कारण इन उपद्रवियों में कानून का भय समाप्त हो जाना है तथा इनको पता है कि हम कुछ भी करें हमारा कुछ भी बिगड़ने वाला नहीं है। यदि राजस्थान में यूपी मॉडल लागू करके इन अपराधियों की नकेल नहीं कसी गई तो आने वाले समय में जीना मुश्किल हो जाएगा।

–सत्ताराम बेनीवाल, वेडिया, चितलवाना, जालौर

अगस्त माह में प्रकाशित होगा विशेषांक

'स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर'

शांतिपूर्ण सत्याग्रह से लेकर सशस्त्र संघर्ष तक सभी माध्यमों से स्वाधीनता का संघर्ष चला था। यह आंदोलन 'स्व' के भाव से प्रेरित था– स्वराज्य, स्वधर्म और स्वदेशी के लिए लाखों लोगों ने बलिदान दिया। इसके साथ ही समाज को शक्तिशाली बनाने तथा इसमें आई विकृतियों को दूर कर सामाजिक पुनर्रचना का कार्य भी जारी था। 15 अगस्त, 1947 को मिली थी स्वाधीनता। 'स्व–तंत्र–ता' की ओर हमारी यात्रा जारी है। इस यात्रा के दौरान कई क्षेत्रों में भारत की पहचान विश्व में बनी है। इस सम्पूर्ण परिदृश्य के अज्ञात या कम ज्ञात पहलुओं को समेटने का एक विनम्र प्रयास इस विशेषांक के माध्यम से किया जाना है।

विशेषांक में प्रकाशनार्थ आलेख /कार्टून/ चित्र/कविता आदि आमंत्रित हैं।

- प्रकाशन सामग्री भेजने की अंतिम तिथिः 10 जुलाई, 2022
- विशेषांक में प्रकाशन हेतु एक संभावित विषय सूची बनाई गई है। आप संपादक से संपर्क कर उसे प्राप्त कर सकते हैं। (मो. 9414312288)
- विशेषांक देशभर के 1 लाख 10 हजार से ज्यादा घरों में पहुँचेगा। इस हेतु विज्ञापन भी प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। विज्ञापन दरें 5 हजार से 3 लाख तक (संपर्क – 9929722111)
- प्रयासकर विज्ञापन लाने वाले व्यक्ति को आकर्षक मानदेय दिया जाएगा।

आप भी लिखिए अपनी फोटो के साथ

पाथेय कण में प्रकाशित किसी समाचार/लेख या अन्य सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया/टिप्पणी या कोई सुझाव अथवा प्रकाशित सामग्री के विषय पर अपने विचार हमें अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो के साथ व्हाट्सएप या मेल करें अथवा डाक से भेजें।

79765 82011 patheykan@gmail.com

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें (दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- मक्का में शिवोपासना
  https://patheykan.com/?p=15700
- संयुक्त परिवार खुशियों का पावर पैक
  https://patheykan.com/?p=15719
- भारत में शिक्षा व्यवस्था
  https://patheykan.com/?p=15749

पाक्षिक
पाथेय कण

ज्येष्ठ शुक्ल 2 से आषाढ़ कृष्ण 1 तक विक्रम संवत् 2079, युगाब्द 5124

1-15 जून, 2022
वर्ष 38 : अंक 05

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने की शिकायत हेतु सम्पर्क नं.
जयपुर प्रांत 9004951020
चित्तौड़ प्रांत 8619273491
जोधपुर प्रांत 9929722111
प्रेषण प्रभारी 9413645211

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

कौन है यह 'मुस्लिम पक्ष'?

ज्ञानवापी परिसर को लेकर मीडिया, विशेषकर टीवी चैनल्स पर लगातार कई दिनों से बार-बार बोला जा रहा है 'हिंदू पक्ष' और 'मुस्लिम पक्ष'।

कौन हैं इस मुस्लिम पक्ष में? क्या भारत में रहने वाले मुसलमान? यह कैसे हो सकता है? भारत के 99 प्रतिशत मुसलमानों के पूर्वज हिंदू ही थे। वे हिंदू पूर्वज तो काशी विश्वनाथ को पूजने वाले थे। ऐसे 'शिव पूजकों' की संतानें 'शिव द्रोही' कैसे हो गई?

9 जुलाई,2021 को बिहार के अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री श्री जमा खान ने बयान दिया था कि उनके पूर्वज हिंदू राजपूत थे। उन्होंने कहा कि जयराम सिंह और भगवान सिंह दो भाई थे। बाद में भगवान सिंह ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था। इन्हीं भगवान सिंह के वंशज हैं जमा खान। तो, क्या भगवान सिंह के पिता और दादा जमा खान के पूर्वज नहीं हुए? प्रश्न यह है कि जमा खान जैसे मतांतरित लोगों को कहां खड़े होना चाहिए? अपने पूर्वजों के आराध्य 'शिव' मंदिर के पक्ष में या मंदिर को तोड़कर बनाई गई मस्जिद के पक्ष में?

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के संयोजक इस्लाम अब्बास ने कुछ समय पूर्व एक वीडियो जारी कर कहा था कि हमारा पूर्वज बाबर नहीं बल्कि भगवान राम हैं। भगवान राम हिंदुओं के लिए भगवान, तो हमारे पूर्वज हैं। अल्लामा इकबाल मानते थे कि उनके पुरखे सप्रू गोत्र के कश्मीरी ब्राह्मण थे। कांग्रेस नेता गुलाम नबी आजाद को कुछ समय पूर्व टीवी पर बोलते हुए सुना गया कि 300 वर्ष पूर्व उनके पूर्वज हिंदू ही थे। लेखक फ्रन्कोईस गौइटर ने अपनी पुस्तक में माना है कि 90 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम लोग हिंदू मूल के हैं जो धर्मांतरित हुए। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सलाहकार पीएस कृष्णन द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट के अनुसार देश के अधिकतर मुसलमानों के पूर्वज हिंदू थे।

7वीं शताब्दी में आए आक्रांता मुहम्मद बिन कासिम से लेकर 18वीं शताब्दी में आए आक्रांता अहमद शाह अब्दाली तक करीब 1200 वर्षों में अनेक आक्रमणकारियों ने हिंदुओं पर अनगिनत अत्याचार किए। जो हिंदू इस्लाम स्वीकार करने को तैयार नहीं हुआ उसे मौत के घाट उतारा जाने लगा। हिंदू माता-बहिनों को 'माले गनीमत' (लूट का माल) समझकर सैनिकों में बांट दिया जाता था। इतिहास इसका गवाह है।

मुहम्मद कासिम ने सिंध विजय के बाद इराक के गवर्नर हज्जाम को पत्र लिखा, ''दाहिर का भतीजा और उसके योद्धा कत्ल कर दिए गए हैं। हिंदुओं को इस्लाम में दीक्षित कर लिया गया है, अन्यथा कत्ल कर दिया गया है। मूर्ति-मंदिरों के स्थान पर मस्जिदें खड़ी कर दी गई हैं।'' मुस्लिम इतिहासकार अल-उतबी अपनी पुस्तक 'किताबे यामिनी' में कासिम द्वारा अनेक स्थानों पर इसी तरह किए गए धर्मांतरण का जिक्र करता है। रिवाड़ी के दुर्ग विजय के संबंध में उतबी लिखता है, 'दुर्ग के 6 हजार हिंदू योद्धा कत्ल कर दिए गए। उनकी पत्नियाँ, बच्चे, नौकर-सब कैद कर लिए गए (दास बना दिए), यह संख्या लगभग 30 हजार होगी।''

अल-उतबी ने दूसरे मुस्लिम आक्रांता महमूद गजनवी के बारे में लिखा है कि जहां भी महमूद जाता था, वहां के निवासियों को इस्लाम स्वीकार करने को मजबूर करता था। बलात् धर्म परिवर्तन या मृत्यु, यही उसका आदेश था। उतबी ने पेशावर में महमूद गजनवी के बारे में लिखा है, '' अल्लाह के शत्रु काफिरों (हिंदुओं) से बदला लेते-लेते दोपहर हो गई। इसमें 15 हजार काफिर मारे गए... मारे गए लोगों की तलाशी में 4 लाख दीनार का धन मिला। उसके अतिरिक्त अल्लाह ने अपने मित्रों (मुसलमान सैनिकों) को 5 लाख सुंदर गुलाम स्त्रियां और पुरुष भी बख्शे।''

मुस्लिम लेखक फारिश्ता के अनुसार मोहम्मद गौरी ने 4 लाख 'खोकर' और 'तिराहिया' हिंदुओं को मुसलमान बनाया। 1399 ईस्वी में आए आक्रांता तैमूर लंग ने अपनी जीवनी 'तुजुके तैमुरी' में लिखा है, ''हिंदुस्तान पर आक्रमण करने का मेरा ध्येय काफिर हिंदुओं के विरुद्ध धार्मिक युद्ध करना है।''

भारत में मुस्लिम आक्रांतों और मुस्लिम शासकों द्वारा कत्लेआम, धर्मांतरण का विवरण कुतुबुद्दीन ऐबक, खिलजी, तुगलक से लेकर सभी मुगलों तक का मिलता है। उस समय के मुस्लिम इतिहासकारों ने ऐसा लिखा है। स्पष्ट है कि भारत के वर्तमान मुसलमान भारत पर आक्रणकारी लुटेरों या बाद में यहां के शासक बन गए तुर्क, अरब, मुगल आदि द्वारा पीड़ित एवं सताए गए हिंदुओं की संतान हैं।

इन सभी धर्मांतरित मुसलमान बंधुओं को सोचना होगा कि यह देश उनका अपना है। इस देश में रहने वाले हिंदुओं में ही उनके 'प्रथम मुस्लिम पूर्वज' के भाई-बहिनों के वंशज हैं। इस देश में प्रत्येक परिवार की वंशावली जागे-भाट द्वारा लिखे जाने की परंपरा है। यदि मुसलमान अपना वंश-वृक्ष ढूंढेंगे- अपने पुरखों के नाम खोजेंगे तो वे अवश्य उस पुरखे तक पहुँच जाएंगे जिसने न जाने कितनी जलालत (अपमान) सहन करने के

... शेष पृष्ठ 6 पर

पत्रकारिता दिवस पर हुए कई कार्यक्रम

पत्रकारों के युगधर्म और पत्रकारिता पर हुई चर्चा

पत्रकारों का किया गया सम्मान

वर्तमान संचार क्रांति के आधार स्तंभ पत्रकार और उनकी पत्रकारिता पर चर्चा करने के साथ ही पत्रकारों का सम्मान करना सुखद अनुभूति देने वाला है। सृष्टि के प्रथम पत्रकार देवर्षि नारद का स्मरण करते हुए उनकी जयंती पर राजस्थान के सभी बड़े स्थानों पर 'पत्रकारिता दिवस' मनाया गया तथा पत्रकारों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर पत्रकारिता की वर्तमान दशा व दिशा पर चिंतन करते हुए पत्रकारिता के महत्व पर चर्चा भी हुई। प्रस्तुत है पाथेय कण को इस संबंध में प्राप्त समाचारों पर एक विहंगम रिपोर्ट–

जयपुर

मीडिया सकारात्मक बातें समाज के सामने लाए- आंबेकर

जयपुर के पाथेय भवन में आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए आरएसएस के अ.भा. प्रचार प्रमुख श्री सुनील आंबेकर ने कहा है कि मीडिया के बदलते दौर व समाचारों की भीड़ में आज प्रथम पत्रकार नारद जी का स्मरण करना बहुत जरूरी हो गया है।

आंबेकर ने कहा कि मीडिया को सनसनी के लिए झूठ फैलाने की बजाय सकारात्मक बातों को समाज के सामने लाना चाहिए। आज देश में बहुत अच्छे और सकारात्मक काम भी हो रहे हैं, उन्हें बढ़ावा मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि पत्रकार भी एक सामाजिक कार्यकर्ता होता है, ऐसे में उसके प्रोफेशन में देशहित व समाजहित भी होना चाहिए। समाज में विवाद पैदा करने वाले विषयों से बचना चाहिए, लेकिन तुष्टिकरण के मुद्दे जो पर्दे के पीछे दबाए जाते हैं उनके बारे में भी समाज को सच्चाई पता चलनी चाहिए।

संघ की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता : छाबड़ा – समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठतम पत्रकार प्रवीण चंद्र छाबड़ा ने कहा कि देश में 1945 से 51 तक संक्रमण काल रहा, उसे भुलाया नहीं जा सकता। स्वाधीनता के आंदोलन में वीर सावरकर, नेहरू, गांधी व सुभाषचंद्र बोस का अविस्मरणीय योगदान था, लेकिन आज प्रगतिशील लोग उनके लिए कुछ भी लिख व बोल देते हैं, जबकि हमें उनके योगदान को पढ़ना चाहिए। स्वाधीनता के समय से ही देश में हिंदू पुनरुत्थान की बात शुरु हो गई थी, जिसमें संघ की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जेइसीआरसी के वीसी अमित अग्रवाल ने भी सम्बोधित किया।

नारद नृत्य नाटिका का मनमोहक मंचन– कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ.अंकित पारीक की टीम ने नारद नृत्य नाटिका की प्रस्तुति देकर सभागार में मौजूद लोगों को भाव–विभोर कर दिया। टीम ने कथक–नृत्य के द्वारा आदि पत्रकार देवर्षि नारद के जीवन चरित्र व हनुमान जी द्वारा दीक्षा–ग्रहण संवाद का मंचन किया। समारोह समिति के संयोजक थे मनोज माथुर।

श्री सुनील आंबेकर ने यह भी कहा-

लोगों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ नहीं बल्कि राष्ट्र के स्व का भाव मन में लेकर आंदोलन किया था, लेकिन स्वाधीनता तभी सही मायनों में स्थापित होगी जब हम स्व के भाव से राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए काम करेंगे। आंबेकर ने कहा आज कई विषयों पर विमर्श चल रहा है, ऐसे में हमें भविष्य बनाने के लिए इतिहास को जानना जरूरी हो गया है। राष्ट्र किसी को पूजने से नहीं, हजारों वर्षों की साधना से बनता है और उसके लिए देश जागरण की आवश्यकता है, इसके लिए मीडिया को अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

पत्रकारों के लिए मन में सम्मान हो– उन्होंने कहा प्रजा जागरूक हो और नई पीढ़ी को नेतृत्व के लिए आगे बढ़ना चाहिए। उस वक्त पूरे समाज को सतत रूप से जागरूक करने का काम नारद जी ने किया था, ऐसे में जीवन के हर क्षेत्र में लीडरशीप मिलनी चाहिए। समाज को दिशा देने में मीडिया की सकारात्मक भूमिका होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राजस्थान में ऐसे पत्रकार भी हैं जो बिना किसी दबाव के विभिन्न विषयों का सत्य सामने लाने का काम करते हैं। कश्मीर से आंतक व छत्तीसगढ़ से माओवाद की खबरें देने वाले पत्रकारों के लिए भी मन में सम्मान होना चाहिए।

सत्य जाने बिना समाचार आगे नहीं बढ़ाएं – उन्होंने कहा कि स्वाधीनता आंदोलन के दौर में पत्रकारिता बहुत प्रतिष्ठित थी क्योंकि उस दौर के सभी क्रांतिकारी कहीं न कहीं लेखन करते थे और संसाधनों की कमी के बावजूद व्यापक प्रचार- प्रसार भी करते थे, लेकिन उस वक्त मीडिया को कुचला गया। ऐसे में उस समय के पत्रकारों को आज याद करना बहुत जरूरी है। नारद जी के आदर्श को भी सामने रखना जरूरी है क्योंकि उनका मंतव्य था कि समाचारों में जानकारी सही होनी चाहिए। आज लोगों तक सत्य को पहुंचाना चुनौतीपूर्ण हो गया है जबकि पूर्ण सत्य को जाने बिना समाचार आगे नहीं बढ़ना चाहिए।

नारद सम्मान
से सम्मानित किए गए पत्रकार

जयपुर

- **श्री चंद्रशेखर हाड़ा** (दैनिक भास्कर के कार्टूनिस्ट)
- **श्री आशीष चौहान** (जी राजस्थान न्यूज)
- **श्री विनय पंत** (ईटीवी भारत)

उदयपुर

- **श्री सुभाष शर्मा** (दैनिक जागरण)
- **श्री नारायण लाल बडेरा** (राजस्थान पत्रिका, कोटड़ा)

अजमेर

- **श्री संतोष गुप्ता** (पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान)
- **श्री सैयद सादिक अली** (प्रिंट मीडिया, डीएनए, दैनिक भास्कर)
- **श्री आंनद शर्मा** (फोटोग्राफर, फ्री लांसर)
- **श्री जसवंत थाड़ा** (कार्टूनिस्ट)
- **श्री राकेश भट्ट** (ब्लॉगर, पुष्कर)
- **श्री कुलभूषण उपाध्याय** (डिजिटल श्रेणी, ब्यावर)
- **श्री राजेन्द्र भट्ट** (ब्लॉगर श्रेणी)

(उपरोक्त सभी को निर्णायक मंडल द्वारा चयनोपरांत नारद-सम्मान से सम्मानित किया गया)

सीकर

सत्य एवं न्याय के साथ रहना पत्रकार का दायित्व - प्रदीप शेखावत

सीकर में आयोजित पत्रकार सम्मेलन में राजस्थान पत्रिका के वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रदीप शेखावत ने कहा है कि पत्रकारिता विश्व को पाश्चात्य की नहीं, भारत की देन है। आद्य पत्रकार नारद जी सदैव सत्य और न्याय के साथ रहे। तीनों लोकों में विचरण करते हुए समाचारों का आदान-प्रदान करते थे। भारतीय फिल्म जगत द्वारा देवर्षि नारद की नकारात्मक छवि प्रस्तुत करना दु:खद है।

श्री शेखावत ने कहा कि सूचना का सत्य के साथ, विश्वसनीयता एवं गहराई से विश्लेषण करते हुए लोक जागरण करना ही पत्रकारिता है।

दैनिक समाचार पत्र उद्योग आस पास के मुख्य संपादक श्री पशुपति कुमार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में आए सभी पत्रकारों का सम्मान किया गया।

अजमेर

केवल घटनाओं का कवरेज ही पत्रकारिता नहीं

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, अजमेर के 'स्वराज सभागार' में आयोजित नारद सम्मान समारोह में बोलते हुए वरिष्ठ पत्रकार श्रीपाल शक्तावत ने कहा है कि पत्रकारिता की दिशा टीआरपी के बजाय समाज के हित और समाज की उपयोगिता के लिए होना जरूरी है, तभी यह सार्थक है।

केवल घटनाओं का कवरेज मात्र ही पत्रकारिता नहीं है। लीक से अलग हटकर कुछ नया, कुछ अलग करने के साथ ही सकारात्मक पत्रकारिता करना, जिसका लाभ समाज को मिले, यह वर्तमान समय में आवश्यक है।

उन्होंने भ्रूण हत्या को रोकने के लिए किए गए स्टिंग ऑपरेशन, बुजुर्ग माता-पिता के संरक्षण और पुलिस थानों में थर्ड डिग्री से 47 मौत होने के बाद बनाए गए कानूनों का उल्लेख करते हुए कहा कि, इससे समाज के एक बड़े वर्ग को लाभ हुआ है।

जोधपुर

संवाद बनाए रखना पत्रकार की जिम्मेदारी- न्यायमूर्ति भाटी

समाज और देश के साथ संवाद बनाए रखना पत्रकार की जिम्मेदारी है। संवाद समाप्त होने पर अराजकता होती है। समाज के सामने सही परिदृश्य आता है तभी समाचार भी होता है। यह विचार जोधपुर में राज. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश डॉ.पुष्पेन्द्र सिंह भाटी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि इंफॉर्मेशन, नॉलेज और विजडम को समाज की भलाई के लिए काम में लेना सच्ची पत्रकारिता है। न्यायमूर्ति भाटी राजस्थान हाईकोर्ट एडवोकेट्स एसोसिएशन तथा विश्व संवाद केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे।

जोधपुर प्रांत के सह-प्रचार प्रमुख श्री हेमंत घोष ने इस अवसर पर देवर्षि नारद के लोक हितार्थ किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। नारद मुनि हमेशा सच्चे और निर्दोष लोगों की आवाज हरि यानि विष्णु तक पहुँचाते थे।

आयुर्वेद विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष प्रो.गोविंद शुक्ला एवं एडवोकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष नाथू सिंह राठौड़ ने भी सभा को संबोधित किया। समारोह में पत्रकारों का सम्मान किया गया।

बाड़मेर

सोशल मीडिया के कारण समाचार की सत्यता एवं विश्वसनीयता का हो रहा है कड़ा परीक्षण- धर्म सिंह भाटी

बाड़मेर में नारद जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार श्री धर्मपाल सिंह भाटी ने कहा कि वर्तमान समय में सोशल मीडिया के कारण समाचार जगत की सत्यता एवं विश्वसनीयता कड़े परीक्षण से गुजर रही है। पत्रकारिता को टूल्स की तरह प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जोधपुर प्रांत के प्रचार प्रमुख श्री पंकज कुमार ने कहा कि प्रथम पत्रकार देवर्षि नारद सदैव इस बात का ध्यान रखते थे कि कोई भी संवाद समाज में कटुता उत्पन्न न करे। वे इस बात का भी ध्यान रखते थे कि कहां कटाक्ष करना है, कहां मीठा बोलना है तथा कहां सिद्धांत की बात करनी है। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को सामाजिक समरसता एवं सद्भाव का ध्यान रखना चाहिए। उनका दायित्व घटना की सत्यता को निरपेक्ष भाव से रखने का है। पत्रकार दिनेश बोहरा ने भी सभा में अपने विचार रखे।

संपादकीय का शेष – बाद इस्लाम स्वीकार किया था। उन्हें साहस कर कहना चाहिए कि हम मुस्लिम आक्रांताओं और शासकों के मंदिर-ध्वंस के पक्ष में नहीं है। हम ऐसे स्थानों के मूल स्वरूप में पुनर्निर्माण के पक्ष में हैं। मीडिया 'मुस्लिम पक्ष' कहकर क्यों यह दिखाना चाहता है कि सारे मुसलमान इस मामले में एक हैं? क्या यह साम्प्रदायिकता फैलाना नहीं है? मीडिया हिंदू पक्ष- मुस्लिम पक्ष के स्थान पर 'मंदिर समर्थक' तथा 'मस्जिद समर्थक' या 'मंदिर पक्ष और मस्जिद पक्ष' भी कह सकता है। **– रामस्वरूप अग्रवाल**

उदयपुर

मर्यादित भाषा में सत्य कहने का साहस भारतीय पत्रकारिता का गुण- हितेश शंकर

राष्ट्र को नेतृत्व करने वाले तिलक, गांधी, मालवीय, बाबा साहेब अंबेडकर, लाजपत राय, डॉ. हेडगेवार आदि ने राष्ट्रसेवा का माध्यम पत्रकारिता को बनाया था। मर्यादित भाषा में सत्य कहने का साहस भारतीय पत्रकारिता का गुण रहा है। यह कहना है पांचजन्य के संपादक हितेश शंकर का।

श्री हितेश शंकर उदयपुर के विश्व संवाद केन्द्र की ओर से आयोजित 'पत्रकार सम्मान समारोह' में बोल रहे थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में राष्ट्रीय आंदोलन से लेकर वर्तमान तक पत्रकारिता की यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आपातकाल के समय देश की पत्रकारिता के स्वरूप में बदलाव आया। वर्तमान मीडिया पर विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

वंदेमातरम् गाकर शुरु होने वाली पत्रकारिता वंदेमातरम् का विरोध करने लगी है। उन्होंने सभी पत्रकारों से आह्वान किया कि वर्तमान में सत्य के साथ साहसी पत्रकारिता की आवश्यकता है। पत्रकारिता ही एक ऐसा पेशा है जो समाज को अन्याय, दुराचार, भ्रष्टाचार जैसे तमाम दुर्गुणों से मुक्त करने की ताकत रखता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे एमडीएस विश्वविद्यालय अजमेर एवं गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय बांसवाड़ा के पूर्व कुलपति प्रो.कैलाश सोडाणी ने कहा कि जब हम पत्रकारिता के सारथी पत्रकार की बात करते हैं तो समाज यह अपेक्षा रखता है कि एक आदर्श पत्रकार नारद जैसा भ्रमणशील, अर्जुन जैसा ध्येयनिष्ठ, एकलव्य जैसा अध्यवसायी, श्रीकृष्ण जैसा कर्मयोगी एवं श्रीराम जैसा मर्यादावादी गुणों से उत्पन्न होना चाहिए।

राजसमंद

नियमित संवाद द्वारा सद्विचारों का प्रसार

पत्रकारिता दिवस पर राजकीय महाविद्यालय आमेट के प्राचार्य डॉ. मनोज बहरवाल ने कहा कि नारद जी देवताओं व असुरों के मध्य नियमित संवाद द्वारा सद्विचारों का प्रचार-प्रसार किया करते थे। वे अनुचित बात पर देवताओं से भी असहमति व्यक्त कर देते थे। सभी पत्रकारों को नारद जी से प्रेरणा लेते हुए सद्विचारों के प्रचार में महती भूमिका निभानी चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमान ठा.सा. शम्भू सिंह जी राव ने की। कार्यक्रम में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व सोशल मीडिया से जुड़े पत्रकार बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

बारां

संचार के अभाव में संसार शून्य है- चौरसिया

वरिष्ठ पत्रकार श्री ललित खंडेलवाल की अध्यक्षता में आयोजित विश्व संवाद केन्द्र के कार्यक्रम में श्री कमलेश चौरसिया ने कहा कि समाज में नित नूतन व चिर पुरातन ज्ञान के साथ बौद्धिक जागृति का काम पत्रकारिता करती है। संचार के अभाव में संसार शून्य है।

आदर्श पत्रकारिता समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्याय और अपराध को समाप्त करने की ताकत रखती है। इस अवसर पर पत्रकारों का सम्मान भी किया गया ।

बारां

चलती-फिरती संवाद एजेंसी थे नारद जी

बारां में नारद जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आचार्य परमानंद ने कहा कि नारद जी चलती-फिरती संवाद एजेंसी थे। उनकी कार्यशैली योग्यता एवं जनकल्याण की भावना को आज का युग भी स्वीकारता है। नारद जी पूरी प्रामाणिकता से, निरहंकार एवं निष्पक्ष भाव से, निष्ठा और समर्पण के साथ अपना दायित्व निभाने वाले पत्रकार थे।

कार्यक्रम काठियाबाबा भक्त मंडल और विद्या भारती के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया था। भक्त मंडल द्वारा स्थानीय पत्रकारों का उनके घर या संस्थान में जाकर सम्मान किया गया।

झालावाड़

पत्रकारिता समाज में अन्याय एवं अत्याचार समाप्त करने में है सक्षम

झालावाड़ के नारद जयंती कार्यक्रम में नारद मुनि के व्यक्तित्व तथा निष्पक्ष पत्रकारिता के गुणों की विस्तृत चर्चा श्री रामस्वरूप गौड़ द्वारा की गई। वक्ताओं की राय थी कि आदर्श पत्रकारिता समाज में व्याप्त अन्याय एवं अत्याचार को समाप्त करने में सक्षम है। विचार-गोष्ठी में कई पत्रकार बंधु उपस्थित थे।

छीपा बड़ौद

प्रिंट मीडिया के समाचारों पर सर्वसमाज का विश्वास

पत्रकार संगोष्ठी को संबोधित करते हुए श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि प्रिंट मीडिया में छपे अक्षर पर सर्वसमाज का विश्वास होता है, इसीलिए मीडिया की भूमिका का महत्व हमेशा ही रहा है। कार्यक्रम में उपस्थित पत्रकारों का सम्मान भी किया गया।

बांसवाड़ा

लोक कल्याण हो पत्रकारिता का उद्देश्य

नारद मुनि का तीनों लोकों में संवाद था। देव, दानव एवं मानव, सभी उनका सम्मान करते थे क्योंकि उनके क्रियाकलापों का उद्देश्य लोक कल्याण रहता था। लोक कल्याण ही पत्रकारिता का उद्देश्य होना चाहिए। यह कहना था डॉ. अमित चौधरी का। उन्होंने बांसवाड़ा में आयोजित पत्रकार सम्मेलन में आगे कहा कि पत्रकारों को देश के प्रति समर्पित और समाज के प्रति चिंतित रहना चाहिए। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ.महीपाल सिंह राव ने कहा कि पत्रकारों की समस्याओं पर भी शासन-प्रशासन और समाज का ध्यान होना चाहिए।

इस अवसर पर पत्रकारों व स्तम्भ लेखकों का सम्मान किया गया। ●

भारत के लिए गौरव के क्षण (मई 2022)

- **73 वर्षों बाद जीता थॉमस कप-** भारतीय बैडमिंटन टीम ने 14 बार की चैंपियन इंडोनेशिया की टीम को हराकर थॉमस कप जीता, जिसके लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने व्यक्तिगत रूप से मिलकर बधाई दी। (बैंकॉक, थाइलैण्ड)
- **डेफ ओलम्पिक में स्वर्ण पदक-** रामगंजमंडी (कोटा) की 15 साल की गौरांशी ने 24वें डेफ ओलम्पिक (बैडमिंटन) खेलों में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। (ब्राजील)
- **निशानेबाजी के विश्व कप में 3 स्वर्ण व 2 कांस्य जीते** (ब्राजील)

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) पर विशेष

समग्र स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है योग

योग मनुष्य को दीर्घायु और स्वस्थ जीवन प्रदान करता है। योग से मनुष्य जीवन में आनंद का अनुभव करता है। यहां कुछ उपयोगी योगासनों को करने की विधि, उनसे होने वाले लाभ व सावधानियों का सचित्र वर्णन किया जा रहा है।

योगाभ्यास के लिए सामान्य दिशा निर्देश :

● योग अभ्यास खाली पेट अथवा अल्पाहार लेकर करना चाहिए। यदि अभ्यास के समय कमजोरी महसूस हो तो गुनगुने पानी में थोड़ा सा शहद मिलाकर लेना चाहिए।

● योग अभ्यास आरामदायक स्थिति में शरीर एवं श्वास–प्रश्वास की सजगकता के साथ धीरे–धीरे प्रारम्भ करना चाहिए।

● अभ्यास के समय श्वास–प्रश्वास की गति नहीं रोकनी चाहिए, जब तक कि आपको ऐसा करने के लिए विशेष रूप से कहा न जाए।

● अभ्यास के समय शरीर को शिथिल रखें और शरीर को सख्त नहीं करें। शरीर को किसी भी प्रकार के झटके से बचाएं।

● अपनी शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के अनुसार ही योग अभ्यास करना चाहिए। अभ्यास के अच्छे परिणाम आने में कुछ समय लगता है, इसलिए लगातार और नियमित अभ्यास बहुत आवश्यक है।

● प्रत्येक योग अभ्यास के लिए ध्यातव्य निर्देश एवं सावधानियां तथा सीमाएं होती हैं। ऐसे ध्यातव्य निर्देशों को सदैव अपने मन में रखना चाहिए।

● योग सत्र का समापन सदैव ध्यान एवं गहन मौन तथा शांति पाठ से करना चाहिए।

● अभ्यास के 20–30 मिनट बाद स्नान या भोजन करना चाहिए।

उष्ट्रासन

इस आसन के अभ्यास की अवस्था में शारीरिक स्थिति ऊंट (उष्ट्र) के समान हो जाती है। इसीलिए इसका नाम उष्ट्रासन है।

अभ्यास विधि

– घुटनों को जमीन पर टिकाते हुए अपनी दोनों जांघों को तथा दोनों पंजों को मिला लीजिए, पंजों को बाहर की तरफ रखते हुए जमीन

अर्धचक्रासन

अर्ध शब्द का अर्थ है आधा तथा चक्र का अर्थ है पहिया। इस आसन में चूंकि शरीर आधे पहिए की आकृति जैसा बनता है, इसलिए इस आसन को अर्ध चक्रासन कहते हैं।

अभ्यास विधि

– दोनों हाथों की सभी अंगुलियों से कमर को पीछे की ओर से पकड़ें। सभी अंगुलियां उर्ध्वमुखी और अधोमुखी स्थिति में हों।

– सिर को पीछे की ओर झुकाते हुए ग्रीवा की मांसपेशियों को खींचना चाहिए।

– श्वास लेते हुए कटि भाग में पीछे की ओर झुकना चाहिए। श्वास को बाहर छोड़ते हुए शिथिल होना चाहिए।

– इस स्थिति में 10–30 सेकेंड तक रुकें तथा सामान्य रूप से श्वास लेते रहें।

– श्वास को अंदर खींचते हुए धीरे–धीरे प्रारम्भिक अवस्था में वापस लौटें।

लाभ

– अर्ध चक्रासान के अभ्यास से मेरुदण्ड लचीला बनता है तथा मेरुदण्ड से सम्बन्धित नाड़ियां मजबूत बनती हैं।

– ग्रीवा की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है तथा श्वसन क्षमता बढ़ाता है।

– सर्वाइकल स्पॉन्डिलाइटिस में यह लाभकारी है।

सावधानियां

– यदि आपको चक्कर आता हो तो इस आसन का अभ्यास करने से बचें।

– उच्च रक्तचाप वाले व्यक्ति अभ्यास करते समय सावधानी से पीछे की ओर झुकें।

पर फैला दीजिए।

– घुटनों और पंजों के बीच एक फुट की दूरी रखते हुए घुटनों के बल खड़े हो जाएं।

– श्वास लेते हुए पीछे की ओर झुकें और धीरे-धीरे दाहिने हाथ से दाहिनी एड़ी और बाएं हाथ से बाईं एड़ी को पकड़ने का प्रयास करें।

– अंतिम स्थिति में जांघ को जमीन पर उर्ध्वाकार (लंबवत्) रखते हुए सिर को हल्का सा पीछे की ओर खींचकर रखें।

– यथासंभव पूरे शरीर का भार अपनी भुजाओं और पैरों पर होना चाहिए।

लाभ

– उष्ट्रासन दृष्टिदोष में लाभदायक है।

– यह पीठ और गले के दर्द से आराम दिलाता है।

– यह उदर और नितंब की चर्बी को कम करने में सहायक है।

– पाचन क्रिया संबंधी समस्याओं के लिए यह अत्यंत लाभदायक है।

सावधानियां

– उच्च रक्तचाप, हृदय रोगी, हर्निया के मरीजों को यह आसन नहीं करना चाहिए।

सेतुबंधासन

सेतुबंध शब्द का अर्थ सेतु निर्माण है। इस आसन में शरीर की आकृति एक सेतु की अवस्था में रहती है।

अभ्यास विधि

– पीठ के बल लेटकर दोनों पैरों को घुटनों से मोड़ते हुए एड़ियों को नितंबों की तरफ लाएं।

– हाथों से पैर के टखनों को मजबूती से पकड़े और घुटने एवं पैरों को एक सीध में रखें।

– श्वास अंदर खींचते हुए धीरे-धीरे अपने नितंब और धड़ को ऊपर की ओर उठाएं।

– इस अवस्था में 10-30 सेकंड तक रहें, इस दौरान सामान्य श्वास लेते रहना चाहिए।

– श्वास बाहर छोड़ते हुए धीरे-धीरे मूल अवस्था में वापस आएं और शवासन में लेटकर शरीर को शिथिल छोड़ दें।

लाभ

– अवसाद एवं चिंता से मुक्त करता है। कमर के निचले हिस्से की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है।

– उदर (पेट) के अंगों में कसावट लाता है। पाचन क्षमता बढ़ाता है और कब्ज से छुटकारा दिलाता है।

सावधानियां

अल्सर और हार्निया से ग्रस्त व्यक्तियों और अग्रिम अवस्था वाली गर्भवती महिलाओं को यह आसन नहीं करना चाहिए। ●

उत्तानपाद आसन

यहां उत्तान का अर्थ ऊपर की ओर उठा हुआ (उर्ध्व दिशा) और पाद का अर्थ पैर है। इस आसन में पीठ के बल लेटकर पैरों को ऊपर उठाया जाता है। इसी कारण इस आसन का नामकरण उत्तानपादासन हुआ।

अभ्यास विधि

– जमीन पर आराम से लेट जाएं, पैरों की स्थिति सीधी हो और हाथों को बगल में रखें।

– श्वास लेते हुए घुटनों को बिना मोड़े धीरे-धीरे अपने दोनों पैरों को ऊपर उठाएं और 30 डिग्री का कोण बनाएं।

– सामान्य रूप से श्वास लेते हुए इस अवस्था में कुछ देर ठहरें।

– श्वास छोड़ते हुए धीरे-धीरे अपने दोनों पैरों को नीचे लाएं और जमीन पर रखें।

लाभ

– यह आसन नाभि केन्द्र (नाभिपदम् चक्र) में संतुलन स्थापित करता है।

– यह उदर पीड़ा, वाई (उदर-वायु), अपच और अतिसार (दस्त) को दूर करने में सहायक होता है।

– यह उदर की मांसपेशियों को मजबूती प्रदान करता है।

– यह आसन घबराहट और चिंताओं से उबरने में सहायक है।

– यह श्वसन क्रिया को उन्नत करता है और फेफड़ों की क्षमता में वृद्धि करता है।

आओ संस्कृत सीखें -3

हिन्दी – संस्कृत

● **आप कहाँ जा रहे हैं?**
– भवान् कुत्र गच्छति?

● **मंदिर जा रहा हूँ।**
– देवालयं गच्छामि।

● **कार्यालय जा रहा हूँ।**
– कार्यालयं गच्छामि।

● **जरा सा/थोड़ा-बहुत।**
– स्वल्पम्

● **पाँच बजे।**
– पञ्चवादने

बूंदी

बीकानेर

भीषण गर्मी में साधना

राजस्थान में चल रहे हैं आठ स्थानों पर संघ शिक्षा वर्ग

वर्तमान की भीषण गर्मी में प्रातः 4 बजे से लेकर रात 10.30 बजे तक व्यस्त दिनचर्या के दौरान सुबह-शाम खुले मैदान पर लगभग 4 घंटे शारीरिक प्रशिक्षण में संघ के स्वयंसेवक पसीना बहाते हुए कठोर साधना कर रहे हैं। शेष समय में बौद्धिक व चर्चाओं के माध्यम से राष्ट्र व समाज से जुड़े विभिन्न विषयों पर मंथन चलता रहता है। सुबह के नित्यकर्म पूरे करने के पश्चात् सभी स्वयंसेवक सामूहिक रूप से प्रातः स्मरण करते हैं जिसमें भारत के महान ऋषियों, महानायकों, वीरांगनाओं, संतों, वैज्ञानिकों, स्वाधीनता के लिए प्राणों की आहुति देने वालों वालों सहित महान नर-नारियों का स्मरण किया जाता है। देश की पवित्र नदियों, पर्वत शृंखलाओं, तीर्थों का स्मरण करते हुए देश और समाज के लिए स्वयं के समर्पण का संकल्प लिया जाता है।

यहां चर्चा हो रही है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा मई-जून माह में प्रतिवर्ष लगाए जाने वाले 'संघ शिक्षा वर्गों'की। देशभर में 108 स्थानों पर ऐसे ही 'संघ शिक्षा वर्ग' आरंभ हो रहे हैं, जिनमें संघ के स्वयंसेवकों को 20 दिनों का प्रशिक्षण लेना होता है। राजस्थान के बीकानेर, नागौर, तिंवरी (जोधपुर), चित्तौड़, जामडोली (जयपुर), झुंझुनू, अलवर एवं बूंदी में ऐसे शिक्षा वर्ग बीती 19 मई से आरंभ हुए हैं।

उल्लेखनीय है कि संघ के कार्यकर्ताओं को तीन शिक्षा वर्ग करने होते हैं। प्रथम और द्वितीय वर्ष के शिक्षा वर्ग अपने प्रांत या क्षेत्र में तथा तृतीय वर्ष का नागपुर (महाराष्ट्र) में आयोजित होता है।

बीकानेर में शिक्षा वर्ग के उद्घाटन अवसर पर बोलते हुए क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम ने शिक्षार्थियों को एक श्रेष्ठ कार्यकर्ता बनकर अधिक समय लगाते हुए कार्य करने व सेवा भाव का जागरण करते हुए संघ शताब्दी वर्ष में समय देने के लिए प्रेरित किया।

नागौर में चल रहे जोधपुर प्रांत के शिक्षा वर्ग में जसनाथ आसन, पांचला सिद्धा के महंत योगी सूरजनाथ महाराज ने कहा कि राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने के उद्देश्य से स्वयंसेवक शारीरिक व मानसिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

बूंदी में चल रहे चित्तौड़ प्रांत के शिक्षा वर्ग में श्री हनुमान सिंह राठौड़ ने बताया कि शिक्षा वर्ग समाज की सेवा व साधना करने वाले कार्यकर्ताओं के गुणों का संवर्धन करने के लिए आयोजित होते हैं। ●

संघ शिक्षा वर्गों में स्वयंसेवक घर की सुख-सुविधाओं से दूर भीषण गर्मी के सामान्य वातावरण में कठिन प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इस प्रशिक्षण में अनुशासन, समयबद्धता, नेतृत्व क्षमता, सामूहिक चिंतन जैसे गुणों का विकास होने के साथ ही शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व व्यावहारिक क्षमताओं का विकास होता है। स्वयंसेवक में विभिन्न विचारधाराओं सहित भारतीय विचार की स्पष्टता और संघ कार्य में होने वाली जिज्ञासाओं के समाधान में ये वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तृतीय वर्ष का संघ शिक्षा वर्ग

भाषाएं भिन्न-भिन्न परन्तु हृदय की भाषा एक

संघ के तृतीय वर्ष के शिक्षा वर्ग का 9 मई को उद्घाटन करते हुए अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख श्री मंगेश भेंडे ने कहा कि तृतीय वर्ष के संघ शिक्षा वर्ग में आए शिक्षार्थियों की भाषा अलग-अलग होती है किंतु सभी के हृदय की भाषा एक होती है। इस एकात्मता से सभी भाषा समझ लेते हैं और कोई समस्या नहीं होती। यही संघ शिक्षा वर्ग की विशेषता है। शिक्षार्थी अगले पच्चीस दिन यहां मिलकर रहेंगे। जब वर्ग समाप्त कर शिक्षार्थी जाने लगते हैं तो आपस में गले लगकर रोने लगते हैं।

उन्होंने कहा कि मन में श्रद्धा और समर्पण के साथ साधना में लगेंगे तो कार्य में सफल होंगे। मन में कार्य के प्रति, विचार के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए। जब श्रद्धा होती है तो कुछ भी संभव हो सकता है और उसी से ज्ञान की प्राप्ति भी होती है। जीवन में समय का सदुपयोग करते हुए अपने जीवन को सार्थक करने संघ शिक्षा वर्ग में शिक्षार्थी आते हैं।

वर्ष 1927 में हुए प्रथम संघ शिक्षा वर्ग का उल्लेख करते हुए श्री मंगेश भेंडे ने बताया कि नागपुर में महल स्थित केंद्रीय कार्यालय के पास पुराने मोहिते बाड़ा में हुए इस वर्ग में कुल सत्रह स्वयंसेवक सहभागी थे और वर्ग 40 दिनों का था। तब से अब तक वर्ग निरंतर लगते आए हैं। इनमें 1948 और 1977 में संघ पर लगे प्रतिबंध और कोरोना काल का समय केवल अपवाद रहा है। इस वर्ग में 735 प्रशिक्षार्थी सम्मिलित हुए हैं। 35 प्रांत प्रमुख और 93 शिक्षक भी वर्ग में हैं।

राजस्थान के जतिनदास बालमुकुंद बिस्सा

राजस्थान के जतिन-दास के नाम से प्रसिद्ध बालमुकुंद बिस्सा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक सिपाही थे। महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने जीवन भर खादी पहनने का संकल्प लिया तथा जोधपुर में खादी की एजेन्सी लेकर गांधी बाजार में खादी की दुकान खोली। 'जवाहर खादी भंडार' नाम की यह दुकान स्वतंत्रता सेनानियों के मिलने का और रणनीति बनाने का एक ठिकाना था।

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जब अधिकतर लोग जेल चले गए थे, उस समय आपने बाहर रहकर आंदोलन को दिशा प्रदान की। भारत की स्वतंत्रता के लिए प्राण-प्रण से लगे बिस्सा जी भी आखिर कब तक बचे रहते, अंग्रेजों ने 'भारत रक्षा कानून' के अंतर्गत उन्हें गिरफ्तार कर जोधपुर के सेंट्रल जेल में डाल दिया। जेल में जब उन्होंने कैदियों की दुर्दशा देखी तो उनके अधिकारों के लिए उन्होंने आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। यह कदम ठीक वैसा ही था जैसा बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी यतीन्द्र नाथ दास ने अपने साथियों के साथ हो रहे अमानवीय अत्याचारों को लेकर उठाया था। इसीलिए बिस्सा जी को राजस्थान का 'जतिन दास' कहा जाता है। प्रारंभ में उन्होंने भोजन करना छोड़ दिया और उसके बाद पानी भी त्याग दिया।

जून माह की भयंकर गर्मी उस समय अपने चरम पर थी ऐसे में भूखे-प्यासे बिस्सा जी लू की चपेट में आ गए और दिन-प्रतिदिन उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। लगातार बिगड़ती हालत को देखकर घबराए अंग्रेज उन्हें अस्पताल ले गए जहां बिस्सा जी 19 जून,1942 को मात्र 34 वर्ष की अवस्था में मातृभूमि के लिए बलिदान हो गए। जब यह समाचार सामान्य जन तक पहुँचा तो बड़ी संख्या में लोग अपने लोकप्रिय नेता व देशभक्त बिस्सा जी के अंतिम दर्शनों के लिए अस्पताल में ही उमड़ पड़े। उनकी अंतिम यात्रा जब शहर के मुख्य बाजारों से निकल रही थी तो अपार जन समूह को देशभक्ति के नारे लगा देख प्रशासन को लाठी चार्ज करना पड़ा, जिसमें सैंकड़ों लोग घायल भी हुए। उसके बाद भी शवयात्रा श्मशान घाट पहुँची, जहाँ उनको अंतिम विदाई दी गई।

जानकारी हो कि देशभक्त बालमुकुंद बिस्सा जिनकी प्रतिमा जोधपुर के जालोरी गेट स्थित सर्किल पर लगाई हुई है, जहाँ प्रतिवर्ष शहरवासी उनके बलिदान दिवस के दिन बड़ी संख्या में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं वहीं बीती 2 मई को इसी देशभक्त की प्रतिमा पर इस्लामिक झंडा लगाने को लेकर भयंकर विवाद हुआ था। ●

(मनोज गर्ग)

प्रताप गौरव यात्रा

42 रथों के माध्यम से 2 हजार स्थानों पर हो रहे हैं बड़े कार्यक्रम

उदयपुर के 'प्रताप गौरव केन्द्र राष्ट्रीय तीर्थ' की ओर से 'स्वराज-75' कार्यक्रमों की शृंखला में प्रताप गौरव यात्रा का आयोजन किया गया है। यात्रा के लिए कुल 42 रथों का निर्माण कराया गया, जो उदयपुर एवं राजसमंद जिलों के 2 हजार से अधिक गांवों, कस्बों एवं नगरों से होकर गुजरेंगे।

इस यात्रा का शुभारम्भ 19 मई को महाराणा प्रताप के राजतिलक स्थान गोगुंदा से किया गया। इस अवसर पर अमर मुनि महाराज तथा पूर्व कुलपति डॉ.कैलाश सोडाणी उपस्थित थे। प्रताप केन्द्र के निदेशक श्री अनुराग सक्सेना ने कहा कि भारत के स्वतंत्र होने के बाद भी तीन-तीन पीढ़ियां बीत गई, लेकिन हमें स्वराज प्राप्त हुआ क्या? उसी स्वराज का भान कराने के लिए यह यात्रा निकाली जा रही है। स्वराज के संदेश को समझने के लिए हमें प्रताप को समझना पड़ेगा। डॉ.सोडाणी ने कहा कि आज परिवार में बच्चों को महाराणा प्रताप के किस्से सुनाने की आवश्यकता है।

स्वतंत्रता सेनानियों का किया जा रहा है सम्मान

स्वराज गौरव यात्रा के दौरान खंड स्तर पर वहां के स्वतंत्रता सेनानियों-योद्धाओं, पर्यावरण प्रेमियों, जल-पहाड़ों के लिए कार्य करने वालों, गौ प्रेमियों, उन्नत किस्म की खेती करने वाले कृषकों तथा देश के लिए बलिदान होने वालों के परिजनों का सम्मान भी किया जा रहा है।

हो रहा है व्यापक स्वागत

यात्रा के रथों का जगह-जगह पर बड़ी संख्या में लोगों द्वारा स्वागत किया जा रहा है। लोग गाजे-बाजे व पुष्प वर्षा के साथ यात्रा रथों को अपने ग्राम-कस्बे में प्रवेश करा रहे हैं। यात्रा का समापन 2 जून को उदयपुर स्थित प्रताप गौरव केन्द्र पर होगा।

ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम द्वारा

भारत की कानून व्यवस्था को चुनौती

मुस्लिम लीग के माध्यम से मुसलमानों ने पृथक देश की मांग की थी। मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बना। शेष बचे भारत में रह रहे मुसलमान क्या अपनी पृथकतावादी मानसिकता को छोड़ पाए?

मुंबई में लगे इस पोस्टर को ध्यान से पढ़ें। इस पोस्टर में मुसलमानों को आह्वान किया गया है कि वे भारत के संविधान के अंतर्गत गठित अदालतों के माध्यम से अपने विवादों का निपटारा न कराकर उलेमाओं से करावें जो मुस्लिम कानून शरीयत के अनुसार विवादों का निपटारा करेंगे। यानि भारत के संविधान और कानून को धत्ता बताकर सीधे शरीयत लागू करने की बात की गई है।

इस पोस्टर के माध्यम से विधि सम्मत तरीके से चुनी गई सरकार को चुनौती दी गई है। 'खुदा की कसम किसी सरकार में इतनी हिम्मत नहीं कि तुम्हारी शरीयत में दखलअंदाजी कर सकें।'

क्या यह हिंदुस्तान के अंदर एक नए पाकिस्तान की सुगबुगाहट तो नहीं है जहां शरीयत विधि से विवादों का निपटारा होगा?

पखवाड़े का कथन

"आपके (हिंदू) समुदाय के बारे में एक चीज जो मैं जानता हूं और उसकी प्रशंसा करता हूं, वह यह है कि आप अपने बड़ों का सम्मान करते हैं।"

एंथनी अल्बनीस
ऑस्ट्रेलिया के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री

चित्र दीर्घा

खचाखच भरा था हॉल

'नवोदय भारत : चुनौतियां और समाधान' विषय पर विहिप के कार्यक्रम में बोलते श्री पुष्पेन्द्र कुलश्रेष्ठ (जयपुर)

नारद जयंती के अवसर पर पाथेय कण (16 मई,2022) के अंक का विमोचन, जयपुर

सेवा भारती, जयपुर द्वारा श्रीरामजानकी सर्वजातीय सामूहिक विवाह के वर-वधुओं का सम्मान

विद्यालय के बच्चों को इस्लामिक ड्रेस पहनकर ईद मुबारक देने का कहा गया

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के एक विद्यालय में मानसिक जिहाद का मामला सामने आया है। प्रयागराज के एक स्थान झूंसी में स्कूल के सभी छोटे बच्चों को ईद के अवसर पर इस्लामिक ड्रेस पहनकर ईद की मुबारकबाद देते हुए बीस सैकंड का वीडियो बना कर देने को कहा गया। उस वीडियो को आगे भेजने एवं शेयर करने पर जोर दिया गया। स्कूल की प्रधानाचार्य डॉ. बुशरा मुस्तफा ने इस एक्टिविटी में भाग लेने वाले बच्चों को अतिरिक्त अंक देने का लालच दिया। परन्तु जैसे ही अभिभावकों को पता चला उन्होंने इस गतिविधि का विरोध किया। डॉ.बुशरा मुस्तफा का कहना था कि अगर अभिभावक सहमत नहीं हैं तो बच्चों को स्कूल से निकाल लें। उन्होंने तर्क दिया कि इस तरह की गतिविधियां बच्चों में आत्म-विश्वास बढ़ाने के लिए की जाती हैं।

विहिप ने इसे धार्मिक स्वतंत्रता का हनन व मानसिक मतान्तरण का मामला बताते हुए प्रिंसिपल के खिलाफ प्रयागराज के क्रीडगंज थाने में आईपीसी की धारा 295 ए, 153ए और 67 के अंतर्गत एफआईआर दर्ज करवा दी है।

उक्त प्रकरण को संज्ञान में लेकर जांच कराई गई है हालांकि प्रिंसिपल के द्वारा कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए माफी मांगने की बात भी सामने आई है।

स्वरोजगार को बढ़ावा देने वाला संगठन लघु उद्योग भारती

भारतीय घरेलू व कुटीर उद्योगों की एक सर्वांगीण झलक हम लघु उद्योग भारती के विभिन्न प्रकार के आयामों में देख सकते हैं। स्वरोजगार को बढ़ावा देने वाला यह संगठन पुरुषों के साथ-साथ घरेलू महिलाओं को उनकी पहचान दिलाते हुए उन्हें सशक्त बनाने के साथ-साथ आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करने में जुटा है । संगठन सरकार के 'सबका साथ, सबका विकास' के उद्देश्य के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है।

महिलाओं को स्वरोजगार

जयपुर, जोधपुर, उदयपुर में पहले से ही महिला लघु उद्योग इकाइयों का गठन हो चुका है। पाली में महिलाओं को स्वावलंबन से जोड़ने के लिए पिछले 16 महीने से संगठन प्रयास में लगा है । पहले 600 सिलाई मशीनें दी गई थीं और अब 60 मशीनें नगीना सेट करने वाली दी गई हैं जो आधुनिक टेक्नोलॉजी से युक्त हैं। 2500 से अधिक महिलाओं को इस इकाई से जोड़ा जा चुका है। वे सभी आत्मनिर्भर बनकर राष्ट्रीय जीडीपी के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगीं। बैठक में यह निर्णय भी लिया गया कि समय-समय पर पाली में बड़े स्तर पर सेमिनार आयोजित किए जाएंगे और महिलाओं को अपने व्यापार को आगे बढ़ाने के महत्वपूर्ण टिप्स भी बताए जाएंगे। यहां लगभग 1500 परिवार आत्मनिर्भर हो सकेंगे।

जानकारी हो कि लघु उद्योग भारती लघु-छोटे-मध्यम उद्योगों का संगठन है। पूरे भारत में 400 से ज्यादा जिलों में इसकी इकाइयां चल रही हैं और अखिल भारतीय स्वरूप की बात करें तो देश भर में इसके 30 हजार से अधिक सदस्य हो चुके हैं। यह निरंतर अपने कद को विशाल करने में प्रयासरत है।

गुवाहाटी में फेयर

लघु उद्योग भारती का इंडिया इंडस्ट्रियल फेयर इस बार **गुवाहाटी** (असम) में रखा गया जहां 400 से अधिक स्टालें लगाई गई। इससे देश के पूर्वी भाग में चालू इकाइयां इसकी छत्रछाया में अपना कद बढ़ा सकेंगीं और नई इकाइयां भी खुल सकेंगी।

सामाजिक सरोकारों से है जुड़ना

उदयपुर शहर के स्थापना दिवस पर वहां की सभी इकाइयों का सामूहिक कार्यक्रम रखा गया था। सभी इकाइयों को सामाजिक सरोकारों से जोड़ने की बात की गई। स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत सभी इकाई क्षेत्रों को परिवहन-व्यवस्था से जोड़ने की मांग भी उठी ताकि उद्योगों के लिए कच्चा माल व तैयार माल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर सहजता से लाया और ले जाया जा सके। अप्रधान खनिज पर ट्रांजिट पास तथा पोर्टल शुल्क समाप्त करने की मांग भी रखी गई।

रक्तदान शिविर

हाल ही में **भीलवाड़ा** में मई माह में लघु उद्योग भारती का 28 वां स्थापना दिवस मनाया गया। इसकी ग्रोथ सेंटर इकाई ने रक्तदान शिविर लगाया जिसमें 101 यूनिट रक्तदान हुआ। शिविर में लघु उद्योग भारती से जुड़े सभी उद्यमी व श्रमिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

युवाओं को खेती- किसानी से जोड़ना होगा

युवाओं को खेती-किसानी से जोड़ने के लिए भारतीय किसान संघ की ओर से झालावाड़ में पांच दिवसीय प्रांत स्तरीय युवा चेतना शिविर का आयोजन किया गया। अतिथियों ने युवाओं के खेती कार्य के प्रति कम होते रुझान पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि युवा किसान ही खेती को नवाचार की ओर ले जा सकते हैं, इसी से किसानों को शोषण आदि से भी मुक्ति मिल सकेगी।

किसान संघ के अखिल भारतीय महामंत्री मोहिनी मोहन मिश्र का कहना था कि किसानों को अपनी फसलों का वास्तविक मूल्य प्राप्त हो सके तथा खेत से लेकर मंडी व्यवस्था तक हो रहे शोषण को मुक्त कराने के लिए युवा शक्ति को आगे आना होगा।

किसान अपने बीज का उत्पादक स्वयं बने। सरकार के द्वारा खाद कंपनियों को 2 लाख करोड़ का अनुदान दिया गया, इसके बजाय किसानों को यह लाभ सीधा उनके खाते में हस्तांतरित करना चाहिए जैसे विषयों पर भी चर्चा हुई।

झालावाड़ जिले की सभी तहसीलों के युवा प्रमुखों और सह युवा प्रमुखों ने शिविर में सहभागिता की।

खेत-किसान को लेकर युवा चेतना शिविर (झालावाड़)

हमारे मंत्र -4

संगठन मंत्र (भाग-1)

ऊँ सं गच्छध्वम् सं वद्धवम् सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागम् यथा पूर्वे सज्जानाना उपासते।।

(ऋग्वेद-10.192.2)

अर्थ- हम सभी मिलकर चलें, हम सब के मन में समान भाव उत्पन्न हों (अर्थात् सभी की सोच एक जैसी हो), पूर्व में सज्जन लोगों द्वारा मिलकर जिस प्रकार देवताओं को आहुतियां दी गई अर्थात् देवताओं की आराधना की गई, वैसे ही हम सब मिलकर कार्य करें।

टिप्पणी- यह मंत्र ऋग्वेद के दशम् अध्याय में आया है। मूल रूप से ये तीन मंत्र हैं जो हमें संगठित होने की प्रेरणा देते हैं। ऊपर लिखा मंत्र संगठन मंत्र का प्रथम भाग है, जिसमें कहा गया है कि हम सब अपने समाज को संगठित करने के लिए समान भाव से आगे बढ़ें, उन्नति करते हुए सभी मिलकर कार्य करें, समान वाणी बोलें। अपने समाज को संगठित करने के लिए हमारे मन में समान भावनाएं उत्पन्न हों ताकि हम किसी विषय पर आसानी से निर्णय ले कर अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकें जिससे हमारा संगठन मजबूत बना रहे।

सिख समाज ने जाटव परिवार की बेटी का कराया विवाह

मालपुर (अलवर) के गांव नेवडिया का बास निवासी रमेश जाटव एक कृषि फार्म पर मेहनत-मजदूरी करके अपने परिवार का पेट पालते हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यधिक खराब होने के कारण गांव के सिख समाज ने रमेश की विवाह योग्य बेटी रीता का विवाह स्थानीय निवासी देशराज से बीती 11 मई को सम्पन्न कराया। विवाह आर्य-समाज की परम्परा के अनुसार कराया गया। रमेश जाटव जिस कृषि फार्म पर कार्य करते हैं उसके मालिक फौजी जगदीश सिंह ने बारातियों के भोजन की सारी व्यवस्था अपनी ओर से की।

सोशल मीडिया के माध्यम से गांव के युवाओं की अनूठी एवं प्रेरक पहल

31 लाख रुपये जुटाकर गांव की निर्धन बेटी को किया विदा

गोल (दौसा) गांव की गुलाब देवी की बेटी अनीता का विवाह नयाबास के ओमप्रकाश से बीती 16 मई को होना तय हुआ। लेकिन शादी के लिए लगाए गए शामियाने में उसी दिन सुबह अचानक आग लग गयी जिससे विवाह में दिया जाने वाला सारा सामान जल कर राख हो गया। बारात के आव-भगत और बेटी के हाथ पीले करने की चिंता से गुलाब देवी पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। अनीता के पिता का 7 साल पहले बीमारी से असामयिक निधन हो चुका था। परिवार में कोई जिम्मेदार व्यक्ति नहीं था। जब उक्त घटना का गांव के कुछ युवाओं को पता चला तो उन्होंने सोशल मीडिया पर 'मिशन कन्यादान' नाम से एक अभियान चला कर मात्र 15 घंटे में 31 लाख रुपये इकट्ठे किए, दुल्हन की विदाई के बाद इस अभियान को बंद कर दिया गया। विवाह के बाद बची शेष राशि को गुलाब देवी के बच्चों के भविष्य के लिए गांव वालों ने एक कमेटी बनाकर सुरक्षित रखा है। सकारात्मक दिशा में यदि सोशल मीडिया का प्रयोग किया जाए तो यह सभी के लिए एक वरदान है।

अनुकरणीय

जीवन भर की कमाई लगा दी मंदिर निर्माण में

किन्नर बबीता ने 50 लाख रुपये से बनवाया शिव मंदिर

होली-दीपावली या किसी के घर में नए सदस्य के आने पर गाने-बजाने एवं दुआएं देकर एक-एक पैसा जोड़कर इक्ट्ठे किए 50 लाख रुपये एकाएक मंदिर निर्माण में लगा देना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। बाड़मेर में किन्नर समुदाय की गादीपति बबीता बहन ने ऐसा ही प्रेरणादायक कार्य किया है। वर्षों पहले जहां बबूल की झाड़ियों का जंगल था वहाँ उन्होंने शिव परिवार का भव्य मंदिर बना कर आमजन के लिए इसे समर्पित किया है। अपनी गुरु तारा बाई से मिली समाज सेवा की प्रेरणा को उन्होंने जारी रखते हुए यह पुण्य कार्य किया है।

पूर्व में भी दिया है खुले मन से-आपको जानकारी हो कि जब देश में राम मंदिर के लिए निधि समर्पण संग्रह अभियान चल रहा था तो बबीता बहन ने पाँच लाख रुपये सहर्ष दिए थे। इसके अलावा वे पाकिस्तान स्थित माता हिंगलाज शक्ति पीठ के लिए 5 लाख रुपये के गहने तथा रानी भटियानी मंदिर के लिए लाखों रुपये के जेवर भेंट कर चुकी है। बबीता बहन ने कोरोना काल के दौरान भी जरूरत मंद लोगों की भरपूर मदद की थी।

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें -
सामान्य- 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
श्रेष्ठ- 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
उत्तम - यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना किस क्रांतिकारी ने की थी?
2. वनवासियों में जागृति लाने वाले 'एकी आंदोलन' के प्रणेता कौन थे?
3. 1857 की क्रांति के समय राजस्थान में कुल कितनी सैनिक छावनियां थीं?
4. डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा में भील आंदोलन का नेतृत्व करने वाले कौन थे?
5. क्रांतिकारी छात्रों को लेकर 'इण्डियन होमरूल सोसायटी' की स्थापना किसने की थी?
6. वीरांगना लक्ष्मीबाई की समाधि स्थल कहाँ स्थित है?
7. 1857 के क्रांतिकारियों में से एक जिसका वास्तविक नाम 'रामचंद्र पांडुरंग' था, वह किस नाम से प्रसिद्ध हुए?
8. 'चलो दिल्ली, मारो फिरंगी' का नारा किस छावनी के क्रांतिकारियों ने दिया?
9. '1857 का स्वातंत्र्य समर' ग्रंथ किस स्थान पर लिखा गया था?
10. वीर कुंवर सिंह को किस युद्ध पद्धति में महारथ हासिल थी?

उत्तर - पृष्ठ 19 पर

सूर्या फाउण्डेशन

कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर (मध्य प्रदेश) हेतु आवेदन

सूर्या फाउण्डेशन देश के विकास हेतु जन जीवन को प्रभावित करने वाले विषयों पर चिंतन, मनन और संशोधन के लिए समर्पित है। अन्य सामाजिक कार्यों के साथ–साथ गुजरात सरकार, आदिजाति विकास विभाग के साथ Public Private Partnership (PPP) के अंतर्गत सूर्या फाउण्डेशन वर्ष 2010 से आवासीय सूर्या एकलव्य सैनिक स्कूल का सफलतापूर्वक संचालन कर रही है। वर्तमान में सैनिक स्कूल में लगभग 500 विद्यार्थी अध्ययनरत है, स्कूल का शैक्षिक एवं खेल आदि अन्य गतिविधियों का प्रदर्शन राज्य के वनवासी विद्यालयों में विशेष उल्लेखनीय है। वर्तमान सत्र से मध्य प्रदेश, जनजातीय कार्य विभाग के साथ वनवासी बहनों हेतु PPP Model के अंतर्गत कक्षा 6 से 12 हेतु कन्या शिक्षा परिसर, सीहोर को भी चलाने का निर्णय हुआ है। इसके लिए निम्नलिखित पदों हेतु आवेदन करें।

क्र.	पद	योग्यता
1.	**प्राचार्या (प्रिन्सिपल–महिला)**	Post Graduate, B.Ed/M.Ed, 15 वर्ष से अधिक शिक्षण का अनुभव, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्राचार्या (प्रिन्सिपल–महिला) के रूप में 5 वर्ष से अधिक का अनुभव, आयु – 35 से 50 वर्ष के बीच। आवासीय विद्यालय के अनुभव को प्राथमिकता दी जायेगी।
2.	**पी.जी.टी शिक्षक** (रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भौतिकी, गणित, एकाउंटेंसी, बिजनेस स्टडीज, अर्थशास्त्र, इंग्लिश और हिन्दी)	M.Sc./M.com/M.A/B.Tech/M.Tech & B.Ed के साथ उच्च माध्यमिक में 3 वर्ष से अधिक का अनुभव। महिला और पुरुष दोनों आवेदन कर सकते हैं।
3.	**टी.जी.टी एवं प्राइमरी शिक्षक** (विज्ञान, गणित, इंग्लिश, सामाजिक विज्ञान, हिन्दी, संस्कृत और कम्प्यूटर)	B.Sc./M.Sc./B.A/M.A/MCA/PGDCA & B.Ed के साथ माध्यमिक में 3 वर्ष से अधिक का अनुभव। महिला और पुरुष दोनों आवेदन कर सकते हैं।
4.	**क्राफ्ट शिक्षक**	चित्रकला/क्राफ्ट में डिप्लोमा/डिग्री के साथ 2 वर्ष से अधिक का अनुभव।
5.	**संगीत शिक्षक**	संगीत विशारद के साथ 2 वर्ष से अधिक का अनुभव।
6.	**ग्रंथपाल (पुस्तकालय सहायक)**	डी.लाइब्रेरी/बी.लाइब्रेरी के साथ 2 वर्ष से अधिक का अनुभव।
7.	**प्रयोगशाला परिचायक (लैब असिस्टेंट)**	B.Sc
8.	**पी.टी.आई (महिला)**	B.PEd के साथ 2 वर्ष से अधिक का अनुभव।
9.	**छात्रावास अधीक्षिका (हॉस्टल वार्डेन)**	ग्रेजुएट के साथ 2 वर्ष से अधिक का अनुभव।
10.	**एडमिनिस्ट्रेटर**	आर्मी ग्रेजुएट, डॉक्युमेंटेशन और कम्प्यूटर में दक्ष।
11.	**लेखापाल**	B.Com/M.Com के साथ लेखापाल का 2 वर्ष से अधिक का अनुभव।
12.	**नर्स (महिला)**	नर्सिंग कोर्स के साथ 2 वर्ष से अधिक का अनुभव।
13.	**स्टोर कीपर – मैस इंचार्ज**	ग्रेजुएट और कम्प्यूटर का बेसिक ज्ञान।
14.	**लिपिक (क्लर्क)**	ग्रेजुएट के साथ 2 वर्ष से अधिक का अनुभव, हिन्दी और अँग्रेजी की टाइपिंग में दक्षता।
15.	**भृत्य (चपरासी)**	दसवीं पास
16.	**चालक (ड्राईवर)**	वैध लाइसेंस (एलएमवी–4 व्हीलर) के साथ 2 वर्ष से अधिक का अनुभव।
17.	**इलेक्ट्रिशियन**	इलेक्ट्रिकल में डिप्लोमा/आई.टी.आई के साथ 2 वर्ष से अधिक का अनुभव।
18.	**प्लम्बर**	प्लम्बिंग में डिप्लोमा/आई.टी.आई के साथ 2 वर्ष से अधिक का अनुभव।

अपनी विशेष क्षमता, योग्यता, गुण एवं उपलब्धि अवश्य लिखें। इसके अतिरिक्त अपनी अन्य जानकारी CV/BIO-DATA में अवश्य लिखकर भेजें। कृपया अपना आवेदन दिनांक **15 जून 2022** तक नीचे दिये गये पते या Email ID पर भेजें। स्टाफ के लिए फैमिली क्वार्टर की व्यवस्था उपलब्ध है।

सूर्या फाउण्डेशन (KSP)
B-3/330 पश्चिम विहार, नई दिल्ली – 110063
Email - kspinterview@gmail.com
मो. 9540780079, 9429667669

सादर स्मरण

राजस्थान के प्रथम डीजीपी श्री रघुनाथ सिंह

सेवा भारती को दिए थे 17 लाख रुपए

94 वर्ष की उम्र में ब्रह्मलीन हो गए राजस्थान पुलिस के प्रथम पुलिस महानिदेशक श्री रघुनाथ सिंह कपूर की दयालुता और सहृदयता की चर्चा आज भी उनके जानने वाले आदर के साथ करते हैं।

श्री रघुनाथ सिंह ने अपनी बचत में से 17 लाख रुपए सेवा भारती को देने के लिए मृत्यु पूर्व अपनी बेटी-दामाद (नीरा एवं आनंद) को कहा था जो उन्होंने राजस्थान पुलिस के सेवानिवृत्त अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री तेजाराम के माध्यम से भिजवाए। श्री तेजाराम जो कि स्वयं सेवा भारती से जुड़े हुए हैं, ने श्री कपूर को सेवा भारती के विभिन्न सेवा कार्यों की जानकारी दी थी। वे बताते हैं कि श्री रघुनाथ सिंह के यहाँ राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण के लिए वे 21 हजार रुपए प्राप्त करने की अभिलाषा से गए थे, उन्होंने 31 हजार रुपए दिए।

श्री रघुनाथ सिंह की दयालुता एवं सहृदयता की चर्चा करते हुए श्री तेजाराम कहते हैं कि उन्होंने न केवल घरेलू सहायक की दोनों बेटियों को नर्सरी से लेकर आगे तक की पढ़ाई का पूरा खर्च वहन किया बल्कि अपनी जमा पूंजी में से 30-35 लाख का घर भी घरेलू सहायक को देने का निर्देश मृत्यु पूर्व दिया था जो उनकी बेटी-दामाद ने पूरा किया। घरेलू सहायक की दोनों बेटियां हर्षिता एवं अरुणा आज एयर-होस्टेज हैं। श्री कपूर अपनी कार अपने अर्दली ड्राईवर को दे गए थे।

31 मई,2022 को उनकी मृत्यु की प्रथम पुण्यतिथि पर पाथेय कण परिवार उनके अनुकरणीय कार्यों के लिए उन्हें स्मरण करता है।

सम्मान

इंदुशेखर तत्पुरुष को अ.भा.साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान

चिंता का विषय कि तथ्यात्मक लेखन लुप्त हो रहा है-प्रो.कुमार

कवि, आलोचक एवं 'साहित्य परिक्रमा' के संपादक डॉ.इंदुशेखर तत्पुरुष को 'मीडिया विमर्श'परिवार द्वारा 14वें 'पं.बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान' से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह सम्मान दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में आयोजित सम्मान समारोह में दिया गया।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफेसर डॉ.चंदन कुमार ने कहा कि आज तथ्यात्मक लेखन लुप्त होता जा रहा है। पत्रकारिता में इसका बड़ा महत्व है। बौद्धिकों और शोधार्थियों की 2 मिनट नूडल्स वाली सोच के कारण तथ्यात्मक लेखन बंद हो रहा है। डॉ.इंदुशेखर तत्पुरुष ने इस अवसर पर कहा कि वह समाज सर्वश्रेष्ठ होता है, जहां साहित्य उसे दिशा देता है। इस कारण समाज में साहित्यिक पत्रकारिता का बड़ा महत्व है। स्वतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद भी साहित्यिक पत्रकारिता ने देश को नई दिशा देने का कार्य किया है। साहित्यिक पत्रिका भी सूचना देती है, परन्तु इसका दायित्व मुख्यधारा की मीडिया से ज्यादा है।

हंसराज कॉलेज, दिल्ली की प्राचार्य डॉ.रमा ने कहा कि साहित्यिक पत्रकारिता में आई भाषा की गिरावट का असर समाज और उसके मूल्यों पर पड़ा है। पत्रकारों का कर्तव्य है कि वे भाषा का ध्यान रखें।

उल्लेखनीय है कि डॉ.इंदुशेखर तत्पुरुष पाथेय कण और पांचजन्य में भी लिखते रहे हैं। पाथेय कण परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई।

पर्यावरण संरक्षण

जल दोष एवं उपाय

विश्व भर में पेयजल की कमी एक विकट समस्या बनती जा रही है। इसका कारण पृथ्वी के जलस्तर का लगातार नीचे जाना है। इसके लिए मानसून के दौरान बहने वाले जल का संचयन और पुनर्भरण किया जाना अति आवश्यक है ताकि भूजल संसाधनों का संवर्धन हो जाए। वर्षा जल संचयन न करने के परिणाम-

1. वर्षा जल नहीं बचाने से भूजल ख़राब हो रहा है जिससे पानी का टीडीएस बढ़ रहा है।
2. सिर के बाल गिर रहे है, गंजापन बढ़ रहा है।
3. त्वचा के कई रोग हो रहे है और उसकी क्वालिटी ख़राब हो रही है।
4. घरों के नल जल्दी-जल्दी ख़राब हो रहे हैं व पाइप लाइन कठोर जल जमने से बार-बार जाम हो जाती हैं।
5. आरओ सिस्टम जल्दी ख़राब हो रहे हैं और बहुत अधिक मेंटेनेंस (मरम्मत) मांग रहे हैं।
6. गीजर भी जल्दी ख़राब हो रहे हैं। यहाँ तक कि टॉयलेट भी ख़राब हो रहे हैं और उनको थोड़े समय में ही बदलना पड़ रहा है।
7. हड्डियों की बीमारियां बढ़ रही हैं।
8. सफ़ेद कपड़े की धुलाई करने पर पीले पड़ जाते हैं।
9. बर्तन भी जल्दी-जल्दी ख़राब हो जाते हैं।
10. गलियों में बरसाती पानी से बाढ़ आ रही हैं

इन सबका समाधान केवल 'रूफ टॉप रेन वाटर हार्वेस्टिंग' है जिससे किसी भी जल स्रोत को रिचार्ज किया जा सकता है और उपरोक्त सभी जल-दोषों से बचा जा सकता है। इसलिए अभी से वर्षा पूर्व इस हेतु वाटर फ़िल्टर लगवा कर वर्षा जल बचाने की तैयारी करनी चाहिए।

(महिला पोलीटेक्निक कॉलेज, प्रताप नगर, में डॉ.पीसी जैन के व्याख्यान पर आधारित)

बाल प्रश्नोत्तरी -20

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 16 मई का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर व्हाट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम उनकी फोटो सहित पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 20 जून, 2022**

1. **हिन्दी का पहला समाचार पत्र 'नारद जयंती' पर प्रकाशित हुआ था, उसका नाम बताइए?**
   (क) केसरी (ख) उदन्त मार्तण्ड (ग) दिग्दर्शक (घ) संवाद कौमुदी
2. **राजस्थान के वनवासी क्षेत्रों में प्रचलित रामायण कौन सी है?**
   (क) भीलोड़ी (ख) मुंडारी (ग) कर्बी (घ) रामकेर
3. **मतांतरितों को एसटी सूची से बाहर करने के लिए संघर्षरत मंच का नाम बताइए?**
   (क) जनजाति रक्षा मंच (ख) जनजाति मंच
   (ग) जनजाति सुरक्षा मंच (घ) जनजाति विकास मंच
4. **'कन्यादान हमारा स्वाभिमान' अभियान किस संस्था द्वारा चलाया जा रहा है?**
   (क) प्रिय सखी (ख) प्यारी सखी (ग) मेरी सहेली (घ) सखी मित्र
5. **भारतीय तट रक्षक बल ने असम की किस वीरांगना के नाम पर अपने पोत का नामकरण किया है?**
   (क) पुष्पलता दास (ख) कनकलता बरूआ (ग) अमल प्रभादास (घ)योगेश्वरी फुकननी
6. **कन्या भ्रूण हत्या पर बनी फिल्म 'वाशिंग मशीन' के फिल्मकार कौन हैं?**
   (क) आनंद प्रकाश (ख) आनंद मोहन (ग) आनंद चौधरी (घ) आनंद चौहान
7. **प्रसिद्ध अमरनाथ यात्रा का समापन कब होता है?**
   (क) श्रावण पूर्णिमा (ख) भाद्रपद पूर्णिमा (ग) कार्तिक पूर्णिमा (घ) माघ पूर्णिमा
8. **हमारे यहां पुराणों की कुल कितनी संख्या बताई गई है?**
   (क) दस (ख) पन्द्रह (ग) अठारह (घ) बारह
9. **स्वामी विवेकानन्द की गुरु माता का नाम बताइए?**
   (क) शारदा देवी (ख) सरिता देवी (ग) सुमन देवी (घ) सुशीला देवी
10. **विश्व रक्तदान दिवस कब मनाया जाता है?**
    (क) 14 जून (ख) 5 जून (ग) 21 जून (घ) 23 जून

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वाट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -20)
(कृपया अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो भी व्हाट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( ) 4.( ) 5.( )
6.( ) 7.( ) 8.( ) 9. ( ) 10.( )

नाम .....पिता का नाम.....

उम्र ..... पूर्ण पता .....

.....पिन.....

मोबाइल नं. .....

बोधकथा

संकल्प की शक्ति

एक बालक परीक्षा में फेल हो गया। उसके साथियों ने इस पर उसका खूब मजाक उड़ाया। इससे उस लड़के को गहरा सदमा पहुंचा। उसके बाद वह बहुत ही तनावग्रस्त रहने लगा। उसने पढ़ना-लिखना और यहां तक कि ढंग से खाना-पीना भी छोड़ दिया। वह हर समय गुमसुम बैठा रहता। बालक के माता-पिता ने उसे समझाया- ''बेटा! एक बार फेल होना इतनी बड़ी असफलता नहीं है जिससे तुम इस तरह परेशान हो जाओ। आखिर, ऐसा कब तक चलेगा। जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ और आगे की सोचो। बालक को माता-पिता की बातों से संतुष्टि नहीं मिली। मानसिक अशांति और निराशा में उसे कुछ नहीं सूझा और एक रात वह आत्महत्या करने के लिए चल पड़ा।

रास्ते में एक बौद्ध मठ मिला, जहां से कुछ आवाजें आ रही थीं। बालक उत्सुकतावश उन आवाजों को सुनने के लिए मठ के अंदर चला गया। वहां उसने देखा कि एक भिक्षुक कह रहा था-''पानी मैला नहीं होता, क्योंकि वह बहता रहता है। पानी के मार्ग में बाधा नहीं आती, क्योंकि वह बहता रहता है। पानी की एक बूंद झरने से नदी, नदी से महानदी और महानदी से समुद्र बन जाती है, क्योंकि पानी बहता रहता है। इसीलिए रुको मत, तुम बहते रहो। जीवन में कुछ असफलताएं आती हैं लेकिन तुम उनसे घबराओ मत। उन्हें लांघ कर दोगुनी ताकत से मेहनत करो और साहस के साथ आगे बढ़ते रहो। बहना और चलना ही जीवन है। एक असफलता से घबरा कर रुक गए तो उसी तरह सड़ जाओगे जिस तरह ठहरा हुआ पानी सड़ जाता है।''

यह सुनकर बालक का खोया हुआ आत्मविश्वास लौट आया। उसने ठान लिया कि वह जीवन में कभी भी असफलताओं से निराश नहीं होगा।

बाल प्रश्नोत्तरी-17 के परिणाम

1. **सान्निध्य, गुप्तेश्वर रोड, दौसा**
2. **वरेण्यं राज, खाटूश्याम जी, सीकर**
3. **हरीश, बिरानी, श्री गंगानगर**
4. **धीरज रायकर, भदेसर, चित्तौड़गढ़**
5. **पूरण कुमावत, आसीन्द, भीलवाड़ा**
6. सुरभि, सारस चौराहा, भरतपुर
7. टीना सैनी, रामगढ़, अलवर,
8. प्रिया प्रजापत, पचेवर, टोंक
9. सगुन बंसल, मण्डरायल, करौली
10. सौम्या टेलर, कोटड़ी, भीलवाड़ा

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर 1.(ग) 2.(क) 3.(ख) 4.(क) 5.(ख) 6.(ख)7.(घ) 8.(ख) 9.(क) 10.(क)

सूचना- अपरिहार्य कारणों से चित्रकथा इस बार नहीं दे पा रहे हैं - संपादक

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

आषाढ़ कृ. 2 से आषाढ़ शु.1 तक, वि.सं.-2079
(16 से 30 जून, 2022)

जन्म दिवस

18 जून (1861)	– बाबू देवकीनंदन खत्री जयंती
आषाढ़ कृ.10(23जून)	– 21 वें तीर्थंकर नमिनाथ जयंती
24 जून (1863)	– इतिहासकार विश्वनाथ काशीनाथ राजवाडे जयंती
27 जून (1838)	– बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जयंती

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

16 जून (712)	– महाराजा दाहिर सेन का बलिदान
16 जून (1918)	– क्रांतिकारी नलिनीकांत बागची की शहादत
17 जून (1996)	– पू. बाला साहब देवरस की पुण्यतिथि
17 जून (1674)	– माता जीजाबाई की पुण्यतिथि
18 जून (1576)	– हल्दी घाटी युद्ध में झालामान का बलिदान
18 जून (1858)	– महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान
19 जून (1942)	– बाल मुकुंद बिस्सा की शहादत
21 जून (1940)	– डॉ.केशवराव बलिराम हेडगेवार की पुण्यतिथि
22 जून (1858)	– प्रथम स्वातंत्र्य समर में अमरचंद बाठिया को फांसी
23 जून (1953)	– डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की शहादत
23 जून (1997)	– आचार्य तुलसी की पुण्यतिथि
24 जून (1564)	– महारानी दुर्गावती का बलिदान
27 जून (1963)	– दादाराव परमार्थ की पुण्यतिथि
27 जून (1839)	– महाराजा रणजीत सिंह की पुण्यतिथि
29 जून (1965)	– स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

19 जून (1677)	– नेताजी पालकर शुद्धि दिवस (परावर्तन दिवस)
21 जून	– अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
23 जून	– अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस
25 जून (1975)	– आपातकाल लगा
25 जून (1889)	– मोगा जिले (पंजाब) के नेहरू पार्क में लगी संघ शाखा पर आतंकी हमला

पंचांग- आषाढ़ (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द-5124, वि.सं.-2079,
शाके-1944
(15 से 29 जून,2022)

चतुर्थी व्रत –17 जून, **पंचक प्रारम्भ** –18 जून (सायं 6.43 बजे), **पंचक समाप्त**– 23 जून (प्रातः 6.14 बजे), **योगिनी एकादशी व्रत**– 24 जून, **प्रदोष व्रत**–26 जून, **रोहिणी व्रत (जैन)**–27 जून, **पितृकार्य अमावस्या**–28 जून, **देवकार्य अमावस्या**–29 जून

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 15–16 जून **धनु** राशि में, 17–18 जून **मकर** राशि में, 19–20 **कुंभ** राशि में , 21 से 23 जून **मीन** राशि में, 24–25 जून **मेष** राशि में, 26 से 28 जून उच्च की राशि **वृष** में तथा 29 जून को **मिथुन** राशि में गोचर करेंगे।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष में **गुरु,** वक्री **शनि** व **बुध** क्रमशः यथावत मीन, कुंभ व वृष राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी मेष व तुला राशि में बने रहेंगे। **सूर्य** 15 जून को दोपहर 12.04 बजे वृष से मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। **मंगल** 27 जून को प्रातः 5.40 बजे मीन से मेष राशि में प्रवेश करेंगे। **शुक्र** 18 जून को मेष से वृष राशि में प्रातः 8.16 बजे प्रवेश करेंगे।

उत्तर स्वातंत्र्य समर प्रश्नोत्तरी- 1. भगत सिंह 2. मोतीलाल तेजावत 3. छः 4. गोविंद गुरू 5.श्यामजी कृष्ण वर्मा 6. ग्वालियर 7. तात्या टोपे 8. एरिनपुरा छावनी 9. लंदन 10. छापामार

पुण्यतिथि पर शतशत नमन

झांसी की वीरांगना
महारानी लक्ष्मीबाई
18 जून

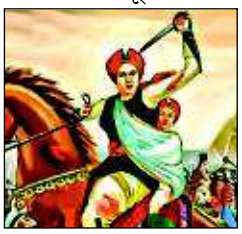

(1828–1858)

संघ के तृतीय संघचालक
पू.बालासाहब देवरस
17 जून

(1915–1996)

आदर्श माता
माता जीजाबाई
17 जून

(1578–1674)

तेरापंथ संघ के नवें अधिशास्ता
आचार्य तुलसी
23 जून

(1914–1997)

पाक्षिक
पाथेय कण
1-15 जून, 2022
(25 मई को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
संपादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 जून, 2022 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में ____________________